CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th Jan. 2022, Revised on 15th Feb. 2022, Accepted 19th Feb. 2022

आलेख

स्वामी विवेकानन्द और शुभ का संचार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

* डॉ.जुगल किशोर दाधीच
सह आचार्य, गाँधी एवं शान्ति अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय वि वविद्यालय ,मोतिहारी (बिहार)
Email-jugalkdadhich@gmail.com, Mob.- 9414564043
रविन्द्र सिंह
शोधार्थी, अहिंसा एवं भाांति विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं ,राजस्थान
Email-luckybhadwal1@gmail.com, Mob.-9736143114

मुख्य शब्द – *शुभ का संचार, संकल्प शक्ति, आत्मविश्वास का मन्त्र, शुभ लेखन, संस्कार, मीडिया विश्वसनीयता आदि।*

सारांश

सूचनाओं के युग में संचार प्रक्रिया मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी हैं। हमारे परिवेश से निकलकर आने वाली ये सूचनाएं हमारे जीवन को काफी गहरे तक प्रभावित करती हैं या यूं कह सकते हैं कि निर्देशित कर रही होती हैं। ये सूचनाएं हमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही भावों में प्राप्त हो रही होती हैं। अपनी प्रकृति के ही अनुरूप ये सूचनाएं अपना–अपना प्रभाव मानव पर छोड़ती हैं। यह बात कई बार प्रमाणित हो चुकी है कि सकारात्मक सूचनाएं हमारे जीवन को बेहतर बनाने में नकारात्मक सूचनाओं की अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि देश–समाज में सकारात्मक सूचनाओं का ज्यादा से ज्यादा प्रवाह हो। स्वामी विवेकानंद ने सूचनाओं में सकारात्मकता के प्रवाह को 'शुभ का संचार' का नाम दिया था और इसी रूप में इसकी विस्तृत व्याख्या भी की। इस शोध पत्र के जरिए स्वामी विवेकानंद की संचार प्रक्रिया का इसी परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाना है।

प्रस्तावना

नकारात्मक सोच जहां निराशा के घनघोर बादलों में पहुंचा देती है, वहीं सकारात्मक सोच दिव्यता और निर्मलता को उपलब्ध करवाती है। सकारात्मक सोच के साथ ही जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में सकारात्मक यानी शुभ के संचार पर विशेष बल दिया जाता है। स्वामी विवेकानंद ने भी संचार की इसी परम्परा यानी शुभ संचार को अपने

जीवन में अपनाया और दूसरों को भी अशुभ यानी नकरात्मकता छोड़कर शुभ का आश्रय लेने के लिए प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद ने शुभ के महत्व को बतलाते हुए इसे जीवन का लक्षण माना है और अशुभ को मृत्यु का पर्याय। वह अकसर कहते थे, 'यदि तुम अपने राष्ट्र को जीवित रखना चाहते हो, तो इन सब चीजों से दूर रहो। शुभ वस्तुओं की एक ही परख यह है कि वे हमें सबल बनाती हैं। शुभ जीवन है, अशुभ मृत्यु है।'[i]

शुभ में आशा का जन्म

स्वामी विवेकानंद मानते थे कि शुभ के व्यवहार से आशा का संचार होता है। इसी आशा के सान्निध्य में फिर असम्भव को भी सम्भव बनाने का साहस मिलता है। वहीं, निराशा से जीवन, जीवन न रहकर नरक के समान कष्टकारी बन जाता है। वह कहते हैं, 'जब मनुष्य आत्मा को पहचान लेता है तो वह चाहे जैसा दुर्बल, पतित अथवा घोर पातकी ही क्यों न हो, उसके भी हृदय में एक आशा की किरण निकल आती है। शास्त्रों का कथन केवल यही है कि बस, हिम्मत न हारो, क्योंकि तुम तो सदैव वही हो; तुम कुछ भी करो अपने असली स्वरूप को तुम नहीं बदल सकते। और फिर यह सम्भव भी कैसे हो सकता है कि प्रकृति स्वयं ही प्रकृति को नष्ट कर डाले ? तुम्हारी प्रकृति तो नितान्त शुद्ध है। यह चाहे लाखों वर्ष तक क्यों न छिपी–ढकी रहे, परन्तु अन्त में इसकी विजय होगी तथा यह अपनी महिमा में प्रकट हो जाएगी। अतएव हम यह कहेंगे कि अद्वैत प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में आशा का संचार करता है, न कि निराशा का।'[ii]

चूंकि स्वामी विवेकानंद ने अपनी बात को कहने के लिए कथावाचन का हमेशा ही बेहद सार्थक उपयोग किया। कथावाचन के माध्यम से वह शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को भी बेहद सरल, सहज एवं सरस ढंग से कह देते थे। शुभ के संचार हेतु वह अशुभ यानी निराशावादी दृष्टिकोण को छोड़कर सकारात्मक सोच को अपनाने के लिए अकसर एक कहानी सुनाया करते थे, 'किसी ज्योतिषी के बारे में एक प्राचीन कथा है कि एक राजा के यहाँ जाकर उसने कहा, 'छः महीने में आपकी मृत्यु हो जायगी।' राजा डरकर हतबुद्धि हो गया और भयवश वहीं तत्काल प्रायः मरणासन्न हो गया। किन्तु उसका मन्त्री चतुर व्यक्ति था। उसने राजा से कहा कि ये ज्योतिषी मूर्ख होते हैं। उस पर राजा का विश्वास नहीं जमा। इससे मंत्री को इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय न सुझा कि वह ज्योतिषी को राजप्रासाद में पुनः बुलाये और राजा को समझाये कि ये ज्योतिषी मूर्ख होते हैं। तब उसने उससे पूछा कि क्या तुम्हारी गणना सही है। ज्योतिषी ने कहा कि कोई गलती नहीं हो सकती। परन्तु मंत्री को संतुष्ट करने के लिए उसने पूरी गणना फिर से की और तब कहा कि वह बिल्कुल ठीक है। राजा का चेहरा फीका पड़ गया। मंत्री ने ज्योतिषी से पूछा, 'और आपकी मृत्यु कब होगी, इसके बारे में आप क्या सोचते हैं ?' 'बारह वर्ष में', जवाब मिला। मंत्री ने तलवार खींच ली और ज्योतिषी का सिर धड़ से अलग कर दिया और राजा से कहा, 'इस मिथ्यावादी को तो आप देख रहे हैं? यह इसी क्षण भर गया।' इस प्रकार एक बुद्धिमान मन्त्री ने निराशा और नकारात्मकता से भरे राजा में एक ही पल में शुभ का संचार भर दिया।

शुभ से संकल्प को बल

जीवन की जो भी बड़ी उपलब्धियां हासिल हो सकी हैं, उनके पीछे हमेशा संकल्प की शक्ति मौजूद रही है। कहा भी गया है कि जीवन में अनेक विकल्पों के बजाय यदि एक संकल्प के सहारे आगे बढ़ा जाए, तो सफलता प्राप्त होना सुनिश्चित है। इसीलिए इसीलिए महापुरुषों ने जीवन में आगे बढ़ने के लिए संकल्प का आश्रय लेने की बात कही है। शुभ के संचार का महत्व बताते हुए स्वामी विवेकानंद बताते हैं, 'मनुष्य को नैतिक और शुद्ध क्यों होना चाहिए? क्योंकि इससे उसकी संकल्प–शक्ति बलवती होती है। वह सब, जो मनुष्य की सत् प्रकृति को उद्भासित करते हुए उसकी संकल्प–शक्ति को सबल बनाये, नैतिक है। और वह सब, जो इसके विपरीत करे, अनैतिक है। मानदंड देश देश और व्यक्ति व्यक्ति के लिए पृथक् पृथक् है।'[iii]

आत्मविश्वास का मन्त्र

जिस प्रकार कुरुक्षेत्र की यद्धभूमि में अर्जुन को मन की चंचलता को वश में लाने की चुनौती सता रही थी, ठीक उसी प्रकार मन में शुभ का संचार भरना भी अति दुष्कर कार्य है। केवल शुभ–शुभ रटने से तो कम से कम इस शुभ का संचार होने से रहा। इस परिस्थिति में एक यक्ष प्रश्न उठ खड़ा होता है कि आखिर इस शुभ को कैसे आत्मसात् किया जाए? इसके समाधान के रूप में

स्वामी विवेकानंद आत्मविश्वास का मन्त्र देते हैं, 'आत्मविश्वास का आदर्श ही हमारी सबसे अधिक सहायता कर सकता है। यदि इस आत्मविश्वास का और भी विस्तृत रूप से प्रचार होता और यह कार्यरूप में परिणत हो जाता, तो मेरा दृढ़ विश्वास है कि जगत् में जितना दुःख और अशुभ है, उसका अधिकांश गायब हो जाता। मानव जाति के समग्र इतिहास में सभी महान् स्त्री–पुरुषों में यदि कोई महान् प्रेरणा सबसे अधिक सशक्त रही है तो वह है यही आत्मविश्वास।'[iv]

इसी आत्मविश्वास के मन्त्र के साथ वह शक्तिशाली बनने का आग्रह करते हैं, 'जगत् इस महान् आदर्श की घोषणा से प्रतिध्वनित हो–सब कुसंस्कार दूर हों। दुर्बल मनुष्यों को यही सुनाते रहो–लगातार सुनाते रहो – 'तुम शुद्धस्वरूप हो, उठो, जाग्रत हो जाओ। हे शक्तिमान, यह नींद तुम्हें शोभा नहीं देती। जागो, उठो, यह तुम्हें शोभा नहीं देता। तुम अपने को दुर्बल और दुःखी मत समझो। हे सर्वशक्तिमान, उठो, जाग्रत होओ, अपना स्वरूप प्रकाशित करो। तुम अपने को पापी समझते हो, यह तुम्हें शोभा नहीं देता। तुम अपने को दुर्बल समझते हो, यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है।' जगत् से यही कहते रहो, अपने से यही कहते रहो – देखो, इसका क्या व्यावहारिक फल होता है, देखो, कैसे बिजली के प्रकाश से सभी वस्तुएँ प्रकाशित हो उठती हैं, और सब कुछ कैसे परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य जाति से यह बतलाओ और उसे उसकी शक्ति दिखा दो। तभी हम अपने दैनंदिन जीवन में उसका प्रयोग करना सीख सकेंगे।'[v]

उच्च से उच्चतर की ओर बढ़ता है शुभ

स्वामी विवेकानंद की यह एकदम स्पष्ट मान्यता थी कि मानव विकास की यात्रा निम्न से उच्च सत्यों की ओर नहीं बढ़ती, बल्कि उच्च से उच्चतर सत्यों की ओर इसका सफर होता है। शुभ के संचार के समय भी स्वामी विवेकांनद इसी सिद्धान्त को आधार बनाते हुए कहते हैं, 'सुधार की उग्र चेष्टा का फल यही होता है कि उससे सुधार की गति रुक जाती है। किसी से ऐसा मत कहो कि 'तुम बुरे हो', वरन् उससे यह कहो – तुम अच्छे हो, और भी अच्छे बनो।'[vi]

शुभ लेखन

भाषण के साथ–साथ स्वामी विवेकानंद लेखन में भी शुभ का मार्ग अपनाने को कहते हैं। उन्होंने सदैव भाषा सबमें तेजस्विता लाने की बात कही, लेखनी के हर शब्द से प्राण का संचार करने का आग्रह किया। लिखते समय विशेषण द्वारा क्रियापदों का भाव प्रकट करने पर जोर दिया, 'आजकल के लेखक जब लिखने बैठते हैं, तब क्रिया पद का बहुत प्रयोग करते हैं। इससे भाषा में शक्ति नहीं आती। विशेषण द्वारा क्रियापदों का भाव प्रकट करने से भाषा में ओज अधिक बढ़ता है। आगे तुम इस प्रकार लिखने की चेष्टा करो तो 'उद्बोधन' में ऐसी ही भाषा में लेख लिखने का प्रयत्न करना। भाषा में क्रियापद प्रयोग करने का क्या तात्पर्य है जानते हो ? इस प्रकार भावों को विराम मिलता है। इसलिए अधिक क्रियापदों का प्रयोग करना जल्दी जल्दी श्वास लेने के समान दुर्बलता का चिह्न मात्र है। यही कारण है कि बंगला भाषा में अच्छी वक्तृता नहीं दी जा सकती। जिनका किसी भाषा पर अच्छा अधिकार है, वे भावाभिव्यक्ति रोक कर नहीं चलते। दाल–भात का भोजन करके तुम लोगों का शरीर जैसा दुर्बल हो गया है, भाषा भी ठीक वैसी ही हो गयी है। खान–पान, चाल–चलन, भाव–भाषा सबमें तेजस्विता लानी होगी। चारों ओर प्राण का संचार करना होगा। नस नस में रक्त का प्रवाह तेज़ करना होगा, जिससे सब विषयों में प्राणों का स्पन्दन अनुभव हो; तभी इस घोर जीवन संग्राम में देश के लोग बचे रह सकेंगे। नहीं तो शीघ्र ही इस देश और जाति को मृत्यु लेगी।'[vii]

शुभ का संस्कार

स्वामी विवेकानंद का प्रयास था कि व्यक्ति में बचपन के दिनों से ही शुभ संस्कार भरने होंगे। इसके अलावा बच्चों के साथ अशुभ व्यवहार को भी उन्होंने अनिष्टकारी बताया, 'जो माता–पिता दिन–रात बच्चों के लिखने–पढ़ने पर जोर देते रहते हैं, कहते हैं, 'इसका कुछ सुधार नहीं होगा, यह मूर्ख है, गधा है', आदि आदि–उनके बच्चे अधिकांश वैसे ही बन जाते हैं। बच्चों को अच्छा कहने से और प्रोत्साहन देने से समय आने पर वे स्वयं ही अच्छे बन जाते हैं। जो नियम बच्चों के लिए हैं, वे ही उन लोगों के लिए भी हैं, जो भाव–राज्य के उच्च अधिकार की तुलना में उन शिशुओं की तरह है। यदि जीवन के रचनात्मक भाव उत्पन्न किये जा सकें तो साधारण व्यक्ति भी मनुष्य बन जायगा और अपने पैरों पर खड़ा होना सीख सकेगा। मनुष्य भाषा, साहित्य, दर्शन, कविता, शिल्प

आदि अनेकानेक क्षेत्रों में जो प्रयत्न कर रहा है उसमें वह अनेक ग़लतियाँ करता है। आवश्यक यह है कि हम उसे उन गलतियों को न बतलाकर प्रगति के मार्ग पर धीरे धीरे अग्रसर होने के लिये सहायता दें। ग़लतियाँ दिखाने से लोगों की भावना को ठेस पहुंचती है तथा वे हतोत्साह हो जाते हैं। श्री रामकृष्ण को हमने देखा हैकृ जिन्हें हम त्याज्य मानते थे, उन्हें भी वे प्रोत्साहित करके उनके जीवन की गति को मोड़ देते थे। शिक्षा देने का उनका ढंग ही बड़ा अद्भुत था।'[viii]

मीडिया विश्वसनीयता में शुभ

संचार प्रक्रिया के ध्वजवाहक मीडिया जगत में बिना किसी गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन के समझा जा सकता है कि वे किस प्रकार नकारात्मका यानी अशुभ को परोसकर अपने हितों को साध रहे हैं। इसी नकारात्मका के कारण आज समूचे मीडिया जगत के समक्ष अविश्वसनीयता का प्रश्न मुंह बाये खड़ा है। इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में स्वामी विवेकानंद के संचारीय सिद्धान्त मार्गदर्शन का कार्य कर सकते हैं। स्वामी विवेकानंद ने अपनी पत्रिका 'उद्बोधन' में भी अशुभ का त्याग करते हुए शुभ का सन्देश देने की रणनीति पर कार्य किया और इसमें वह काफी हद तक सफल भी हुए। उनका मानना था, 'धर्म प्रचार के काम को किसी पर भी बात बात में नाक–भौं सिकोड़ने का काम न समझ लेना। शरीर, मन और आत्मा से सम्बद्ध सभी बातों में मनुष्य को सुनिश्चित भाव देना होगा, परन्तु घृणा के साथ नहीं। आपस में एक दूसरे से घृणा करते करते ही तुम लोगों का अधःपतन हुआ है। अब केवल सबल तथा जीवन को संगठित करने का भाव फैलाकर लोगों को उठाना होगा–पहले हिन्दू जाति को और उसके बाद दुनिया को असल में श्री रामकृष्ण के अवतीर्ण होने का उद्देश्य ही यह था। उन्होंने जगत् में किसी का भाव नष्ट नहीं किया। उन्होंने महापतित मनुष्य को भी अभय और उत्साह देकर उठा लिया है। हमें भी उनके चरण–चिह्नों का अनुसरण कर सभी को उठाना होगा– जगाना होगा–समझा ? ''तुम्हारे इतिहास, साहित्य, पुराण आदि सभी शास्त्र मनुष्य को केवल डराने का ही कार्य करते हैं। मनुष्य से केवल कह रहे हैं– 'तू नरक में जायगा, तेरी रक्षा का कोई उपाय नहीं है। इसलिए भारत की नस नस में इतनी अवसन्नता आ गयी है। अतः वेद–वेदान्त के उच्च भावों को सरल भाषा में लोगों को समझा देना होगा। सदाचार, सद्व्यवहार और शिक्षा का प्रचार कर ब्राह्मण और चाण्डाल को एक ही भूमि पर खड़ा करना होगा। 'उद्बोधन' में इन्हीं विषयों पर लिखकर बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी को उठा दे तो देखूं। तभी जानूंगा तेरा वेद–वेदान्त पढ़ना सफल हुआ है।'[ix]

स्वामी विवेकानंद शुभ को मन की शुद्धता के रूप में देखते थे। इस सन्दर्भ में वह एक कहानी अकसर सुनाया करते थे, 'एक समय एक संन्यासी एक पेड़ के नीचे बैठता था और लोगों को पढ़ाया करता था। वह केवल दूध पीता था और फल खाता था और असंख्य प्राणायाम किया करता था। फलतः अपने को बहुत पवित्र समझता था। उसी गांव में एक कुलटा स्त्री रहती थी। प्रतिदिन संन्यासी उसके पास जाता था और उसे चेतावनी देता था कि उसकी दुष्टता उसे नरक में ले जायगी। बेचारी स्त्री अपने जीवन का ढंग नहीं बदल पाती थी, क्योंकि वही उसकी जीविका का एकमात्र उपाय था, फिर भी वह उस भयंकर भविष्य की कल्पना से सहम जाती थी, जिसे संन्यासी ने उसके समक्ष चित्रित किया था। वह रोती थी और प्रभु से प्रार्थना करती थी कि वे उसे क्षमा करें क्योंकि वह अपने को रोक न पाती थी। कालान्तर में कुलटा स्त्री और संन्यासी दोनों ही मरे। स्वर्ग–दूत आये और उसे स्वर्ग ले गये, जब कि संन्यासी की आत्मा को यमदूतों ने पकड़ा। वह चिल्लाया, 'ऐसा क्यों? क्या मैंने पवित्रतम जीवन नहीं बिताया है और प्रत्येक मनुष्य को पवित्र होने की शिक्षा नहीं दी है ? मैं नरक में क्यों ले जाया जाऊँ, जब कि यह कुलटा स्त्री स्वर्ग ले जायी जा रही है।' यमदूतों ने उत्तर दिया, 'क्योंकि जब वह अपवित्र कार्य करने को विवश थी, उसका मन सदैव भगवान में लगा रहता था और वह मुक्ति मांगती थी, जो अब उसे मिली है। किन्तु इसके विपरीत तुम यद्यपि पवित्र कार्य ही करते थे, परन्तु अपना मन सदैव दूसरों की दुष्टता पर ही रखते थे, तुम केवल पाप देखते थे और केवल पाप का ही विचार करते थे और इसलिए अब तुम्हें उस स्थान को जाना पड़ रहा है, जहाँ केवल पाप ही पाप है। इस कहानी की शिक्षा स्पष्ट है। बाह्य जीवन कम महत्व का होता है, हृदय शुद्ध होना चाहिए और शुद्ध हृदय केवल शुभ को ही देखता है, अशुभ को कभी नहीं। हमें मनुष्य जाति के अभिभावक बनने का कभी चेष्टा न करनी चाहिए, न कभी पापियों का सुधार करने वाले संत के रूप में वक्तृता–मंच पर खड़े होना चाहिए । अच्छा हो, यदि हम अपने को पवित्र करें, और फलस्वरूप हम दूसरे की यथार्थ सहायता भी करेंगे।'[x]

निष्कर्ष

इन सन्दर्भों का अध्ययन करने के पश्चात् इस निष्कर्ष तक पहुंचा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद की संचार नीति पूरी तरह से शुभ के संचार पर आधारित थी। अगर आज के संचार युग में उनके 'शुभ का संचार' सिद्धान्त को अपना लिया जाए, तो जहां कई निरर्थक संघर्षों का समाधान हो सकेगा, वहीं सत्य से साक्षत्कार की यात्रा सफलता के करीब पहुंचेगी।

[i] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–9, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–156

[ii] विवेकानंद, स्वामी, भारत में विवेकानंद, श्रीरामकृष्ण आश्रम, नागपुर, 1950, पृष्ठ–79

[iii] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–9, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–192

[iv] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–8, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–12

[v] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–8, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–14

[vi] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–7, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–30

[vii] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–6, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–94–95

[viii] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–6, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–112

[ix] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–6, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–112–113

[x] विवेकानंद, स्वामी, विवेकानंद साहित्य, खंड–6, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2012, पृष्ठ–268–269

*** Corresponding Author**
डॉ.जुगल किशोर दाधीच
सह आचार्य, गाँधी एवं शान्ति अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,मोतिहारी (बिहार)
Email-jugalkdadhich@gmail.com, Mob.- 9414564043
रविन्द्र सिंह
शोधार्थी, अहिंसा एवं भाांति विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं ,राजस्थान
Email-luckybhadwal1@gmail.com, Mob.-9736143114